

UGC Approved, Journal No. 49321 (Old)  
Impact Factor : 7.0 (IIFS)

ISSN : 0976-6650

# Shodh Drishti

(An International Peer Reviewed Refereed Research Journal)

Office : H.No. 498, South Kakarmatta, B.L.W., Varanasi-221004 (U.P.)  
Mob. 9415388337, E-mail : shodhdrishtivns@gmail.com, website : shodhdrishti.com

Date : 13-02-2025

Ref. : SD/02/11

## CERTIFICATE OF PUBLICATION

It is certified that the research paper of  
**Ms. Geeta Bhutani**  
Research Scholar, Department of Education, Mansarovar Global University, Billkisganj, Sehore, Madhya Pradesh  
**Dr. Rama Singh**  
Research Guide, Department of Education, Mansarovar Global University, Billkisganj, Sehore, Madhya Pradesh

entitled  
*"The Influence of Interaction of Parents with their Adolescent Children with Regard to  
Problem Solving Ability: A Study in Ghaziabad District"*  
has been published in our Peer Reviewed Refereed Research Journal.  
*Shodh Drishti* (Vol. 16, No. 2.1, February 2025) having ISSN No. 0976-6650.

Yours Sincerely

  
(Mushtaque Ahmad)  
Managing Director

*Shodh Drishti*  
An International Refereed  
Research Journal



शुप्रसिद्ध गीतकार माहेश्वर तिवारी को भावभीनी-शृद्धांजलि



जन्म :- 22 जुलाई 1939, बस्ती (उ.प्र.) निधन :- 16 अप्रैल 2024, सुराबाबाद (उ.प्र.)

माहेश्वर जी का निधन- एक बड़े गीतकार से हमेशा के लिए- जुदा हो जाना है... आपसे 3-4 बार मुलाकात का अवसर भी प्राप्त हुआ था, कुछ महत्वपूर्ण विचारों पर आपसे चर्चाएँ भी हुई थीं, लेकिन जितना आपसे जानना और सीखना चाहता था, उसका दर्शाश भी पूरा नहीं हो पाया जितनी गहरी और विस्तृत बातचीत आपसे होनी चाहिए थी, उतनी संभव नहीं हो पाई... इसके बावजूद आपसे बहुत कुछ सीखा और बहुत कुछ जाना, खासकर आपके गीतों को सुनकर। आपकी गायन-शैली की अभिव्यक्ति में- अर्थ-अरे-शब्दों की संवेदनात्मक और भावनात्मक गहराई होती है। मैं आज भी आपके गीतों से प्रेरणा लेता हूँ...

जो लोग गीत लेखन या प्रस्तुतिकरण में रुचि रखते हैं, उन्हें तिवारी जी के वीडियो अवश्य देखने चाहिए। उनके गीतों में सुर, लय, तुक, ताल, गति, यति का अद्वितीय समन्वय मिलता है, जो जन-जीवन की रचनात्मक- भावनाओं और मानवीय संवेदनाओं के साथ घुल-मिल जाती है। आपकी यह गहरी भावनात्मक अनुभूति- श्रोताओं को अभिभूत कर देती है। ऐसा रचनात्मक और भावनात्मक संतुलन अब दुर्लभ है, वह अन्य गीतकारों के यहाँ नहीं मिलता...

आपकी आत्मीयता एवं सहृदयता- को कभी शूलाया नहीं जा सकता। आपके देवलोक-गमन के बाव आप के विषय में कुछ कह पाने के लिए शब्द नहीं मिल पा रहे हैं... सिर्फ जो मेरे अंतर के भाव हैं, जो आपके प्रति आदर और प्रश्न हैं, बस वही मेरी आपके प्रति शृद्धांजलि है। साथ ही, मैं ईश्वर से...

- डॉ. सुनील कुमार मानस



आलोचन दृष्टि,  
आजाद नगर, विन्डकी, जनपद-फतेहपुर, उ०प्र०-212635  
ई-मेल : aalochan.p@gmail.com  
वेबसाइट : <https://aalochandrishti.org/>



Website QR Code



ISSN : 2455-4219

# आलोचन दृष्टि

## Aalochan Drishti

An International Peer Reviewed Refereed  
Research Journal of Humanities

वर्ष : 09  
Year - 09

अंक : 37  
Volume - 37

जुलाई - सितम्बर, 2024  
July - September, 2024

प्रधान-संपादक

डॉ० सुनील कुमार मानस

संपादक

डॉ० योगेश कुमार तिवारी

प्रबंध-संपादक

डॉ० सुधीर कुमार तिवारी



आलोचन दृष्टि

वर्ष-9

अंक-37

जुलाई - सितम्बर, 2024

ISSN : 2455-4219

# विशेष शिक्षा में प्रशिक्षु शिक्षकों के दृष्टिकोण पर प्रशिक्षण कार्यक्रमों का प्रभाव

कृपाल ठक्कर\*  
ज्योति\*\*

विशिष्ट आवश्यकता वाले विद्यार्थियों के लिए कुछ अतिरिक्त संरक्षण की आवश्यकता होती है, क्योंकि उन्हें सामान्य शिक्षा प्रणाली में वह अवसर नहीं प्राप्त हो पाते जो उन्हें अपेक्षित हैं। इसी लिए विशेष विद्यालयों का महत्व विशिष्ट बालकों के शिक्षण-प्रशिक्षण संदर्भ में अभी भी प्रासंगिक है, विशेष रूप से सांवेगिक रूप से (दृष्टिबाधित/अल्पदृष्टिबाधित/बधिर/ऊँचा सुनने वाले) बच्चों के लिए। विशेष शिक्षा के अंतर्गत इस वर्ग के बच्चों के लिए अपेक्षित शिक्षकों की आवश्यकता बनी हुई है। इस आवश्यकता को पूरा करने के लिए विश्वविद्यालयों/विद्यालयों द्वारा D.El.Ed./B.Ed. Special प्रशिक्षण कार्यक्रम भी आयोजित किए जा रहे हैं। जिसके माध्यम से प्रशिक्षु शिक्षक दिव्यांग बच्चों के लिए उपयुक्त शिक्षण कौशल और विधियाँ सीखते हैं। यह पाठ्यक्रम प्रशिक्षु शिक्षकों को इस प्रकार तैयार करता है कि वे इन बच्चों की शैक्षिक और सामाजिक आवश्यकताओं को समझ कर उन्हें पूरा करने में सक्षम हो सकें। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य प्रशिक्षण कार्यक्रमों के प्रभाव का विश्लेषण करना है, जिससे प्रशिक्षु शिक्षकों की क्षमता और दृष्टिकोण में सकारात्मक बदलाव लाया जा सके और विशेष शिक्षा के क्षेत्र में समावेशिता और गुणवत्ता सुनिश्चित की जा सके।

मुख्य शब्द : विशिष्ट शिक्षा, शिक्षक दृष्टिकोण, प्रशिक्षण कार्यक्रम।

किसी भी समाज में विषमता को दूर करने का सबसे सशक्त माध्यम है— शिक्षा। यह व्यक्ति को न केवल ज्ञान और कौशल प्रदान करती है, बल्कि उसमें सोचने-समझने एवं उचित निर्णय लेने की क्षमता भी विकसित करती है। यह समाज के विकास में योगदान करने के साथ-साथ व्यक्तिगत अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति जागरूक भी करती है। शिक्षा के मेरुदंड के रूप में शिक्षक का दृष्टिकोण, उनकी शिक्षण विधियाँ और उनके द्वारा कार्यान्वित शैक्षिक तकनीकी शिक्षा की गुणवत्ता को निर्धारित करती हैं। एक सकारात्मक और सहायक दृष्टिकोण से शिक्षक न केवल बच्चों के शैक्षिक प्रदर्शन में सुधार कर सकते हैं, बल्कि उनके आत्म-सम्मान और समाज में समावेशिता को भी बढ़ावा दे सकते हैं। इसके विपरीत, यदि शिक्षक का दृष्टिकोण नकारात्मक या सीमित होता है, तो इससे बच्चों की शैक्षिक प्रगति और मानसिक विकास पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

प्रस्तुत शोध लेख का उद्देश्य विशेष शिक्षा पाठ्यक्रम के अंतर्गत प्रशिक्षित हो रहे शिक्षकों के दृष्टिकोण, प्रशिक्षण कार्यक्रम और उन्हें प्रभावित करने वाले कारकों का विश्लेषण द्वितीयक आकड़ों के आधार पर किया गया है। यह शोध लेख भावी शिक्षकों के दृष्टिकोण, शिक्षण अभ्यास, शिक्षण विधियों और विद्यार्थियों की समस्याओं को समझने, हल करने और नए समाधान खोजने की क्षमता प्रदान करने का प्रयास करता है, जिससे न केवल सामाजिक और आर्थिक विकास में योगदान होता है, बल्कि मानसिक और बौद्धिक विकास में भी सहायता प्राप्त होती है। विशिष्ट शिक्षा, एक ऐसी शिक्षा प्रणाली है जो विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चों की आवश्यकताओं पर केंद्रित है, जो शारीरिक, मानसिक एवं भावनात्मक विकलांगताओं से प्रभावित बच्चों के लिए अनुकूलन का कार्य करती है। इन बच्चों को सामान्य शिक्षा प्रणाली में आने वाली कठिनाइयों के परिणाम स्वरूप इन्हें विशेष रूप से डिज़ाइन किए गए पाठ्यक्रम, सहायक उपकरण एवं प्रशिक्षित शिक्षकों की आवश्यकता होती है। इसलिए यह मात्र बच्चों के विकास के लिए नहीं, बल्कि समाज की समग्र प्रगति के लिए भी महत्वपूर्ण है।

शिक्षण में सुधार, प्रशिक्षुओं के दृष्टिकोण और शिक्षण पद्धतियों के प्रभावी मूल्यांकन के माध्यम से विशेष शिक्षा के क्षेत्र में आवश्यक बदलाव संभव हो सकते हैं। शिक्षक का सकारात्मक दृष्टिकोण न केवल शिक्षकों की गुणवत्ता में सुधार करता है, बल्कि यह बच्चों के समग्र विकास और समाज में उनके समावेशिता को

\* सहायक आचार्य, डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर मुक्त विश्वविद्यालय, अहमदाबाद, गुजरात-382481।  
\*\* सहायक आचार्य, अष्टवक्र इंस्टिट्यूट ऑफ रिहैबिलिटेशन साइंस एंड रिसर्च दिल्ली-110085।

देता है। इस अध्ययन के परिणाम शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों की प्रभावशीलता का मूल्यांकन करने में सहायक होंगे, जिससे प्रशिक्षुओं की प्रेरणा, दृष्टिकोण, और उनके शिक्षण तकनीकी पर प्रशिक्षक की भूमिका को स्पष्ट किया जा सकेगा। साथ ही, शिक्षक प्रशिक्षण प्रणाली में सुधार के द्वारा यह सुनिश्चित किया जा सकता है कि प्रशिक्षक विशेष शिक्षा के क्षेत्र में अधिक प्रभावी ढंग से कार्य कर सकें। इस प्रकार विशेष शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षण पद्धतियों और पाठ्यक्रमों को और अधिक प्रभावी बनाकर सांवेगिक रूप से दिव्यांग बालकों के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित की जा सकती है।

**प्रशिक्षण कार्यक्रमों का प्रशिक्षु शिक्षकों के दृष्टिकोण पर प्रभाव-** विशेष शिक्षा एक संभावनाओं से परिपूर्ण एक चुनौतीपूर्ण क्षेत्र है, जिसमें प्रशिक्षु शिक्षकों के दृष्टिकोण और शिक्षण विधियाँ महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करती हैं। विशेष रूप से जब वे सांवेगिक रूप से विशिष्ट बालकों के लिए शिक्षा प्रदान करने के लिए तैयार होते हैं, तो उनके दृष्टिकोण को प्रभावित करने वाले विभिन्न कारक उनके शिक्षण कौशल और व्यवहार को आकार देते हैं। इन कारकों को समझना और पहचानना अत्यंत आवश्यक है, जिससे प्रशिक्षु शिक्षकों की प्रभावशीलता को बढ़ाया जा सके और विशेष शिक्षा प्रणाली में सुधार किया जा सके।

**विकलांगता का प्रभाव-** विकलांगता केवल शारीरिक रूप में नहीं, बल्कि सामाजिक और मनोवैज्ञानिक रूप से भी व्यक्ति पर गहरा प्रभाव डालती है (कुमारी, 2013)। यह समाज में असमानता और भेदभाव का कारण बन सकती है, जिससे विकलांग व्यक्ति को मानसिक उत्पीड़न और अलगाव का सामना करना पड़ता है। साथ ही, ने विकलांगता भौतिक और सामाजिक बाधाओं के कारण उत्पन्न होती है, जो व्यक्ति के विकास में रुकावट डालती हैं। समाज में इन बाधाओं की मौजूदगी विकलांग व्यक्तियों की प्रगति को रोकती है (गाताडे, 2013)।

**दिव्यांगजन हेतु सुगम्य वातावरण-** विकलांगता की सामाजिक परिभाषा केवल शारीरिक अक्षमता तक सीमित नहीं है; यह उस सामाजिक वातावरण से उत्पन्न होती है, जो विकलांग व्यक्ति के लिए अनुकूल नहीं होता। गुप्ता (2016) ने अपने लेख "विकलांगता से आगे सुगम्यता और कल्याण" में यह स्पष्ट किया है कि विकलांगता कोई अभिशाप नहीं है, बल्कि यह केवल उस वातावरण की आवश्यकता है जो विकलांग व्यक्तियों के लिए सुगम्य हो। यदि विकलांग व्यक्तियों को एक समान और सुलभ माहौल प्रदान किया जाए, तो वे अपनी पूरी क्षमता का उपयोग कर सकते हैं और समाज में अपनी स्थिति को सशक्त बना सकते हैं। सुगम्य वातावरण विकलांग व्यक्तियों के लिए शिक्षा, रोजगार और अन्य सामाजिक अवसरों तक पहुंच को सरल बनाता है, जिससे वे आत्मनिर्भर और सशक्त बन सकते हैं। तरंग (1998) ने भी इस बात पर बल दिया कि भारत में विकलांग व्यक्तियों को शिक्षा और कौशल विकास के अवसर प्रदान किए जा सकते हैं। विकलांग व्यक्तियों के लिए शिक्षा न केवल उनके व्यक्तिगत विकास के लिए आवश्यक है, बल्कि यह समाज के लिए भी उपयोगी हो सकती है, क्योंकि वे समाज में सक्रिय रूप से योगदान करने में सक्षम हो सकते हैं।

**समाज में दिव्यांगजन के प्रति पूर्वाग्रह-** कुमारी (2013) एवं गाताडे (2013) दोनों ही विद्वत्जन ने इस पर बल दिया है कि विकलांग व्यक्तियों के लिए समावेशी और समान अवसर देने के लिए समाज की मानसिकता में बदलाव की आवश्यकता है। समाज का विकलांगता के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण, जैसे कि भेदभाव, उपेक्षा और असमानता, विकलांग व्यक्तियों की सामाजिक स्थिति को और भी कमजोर बना देता है। यदि हम विकलांग व्यक्तियों को समान रूप से देखेंगे और उनके साथ समान व्यवहार करेंगे, तो समाज में सकारात्मक बदलाव आ सकता है। इसके विपरीत, यदि समाज उन्हें अलग-थलग करता है और उनके साथ भेदभाव करता है, तो यह उनके आत्मविश्वास और विकास में रुकावट उत्पन्न करता है। एक समावेशी और सुलभ समाज विकलांग व्यक्तियों को अपनी पूरी क्षमता तक पहुंचने का अवसर प्रदान करता है और समाज को अधिक समान और न्यायपूर्ण बनाता है। तरंग (1998) के अनुसार, प्राकृतिक विकलांगता की तुलना में मानव निर्मित विकलांगता अधिक चिंता का कारण है। मानव निर्मित विकलांगता से तात्पर्य उन सामाजिक और भौतिक बाधाओं से है, जो विकलांग व्यक्तियों के लिए जीवन को कठिन बना देती हैं। यह बाधाएँ शारीरिक, रथापत्य, यातायात संबंधी और मानसिक हो सकती हैं। रघुराम (2016) ने इसे इस प्रकार से व्यक्त किया है कि अधिकतर दिव्यांग ही सक्षम लोगों को यह सिखाते हैं कि जब जीवन में चुनौती आए तो खुद चुनौती को स्वीकार करो, जो दर्शाता है कि विकलांग व्यक्ति अपनी परिस्थितियों से निपटने में सक्षम होते हैं लेकिन समाज की स्थापित बाधाओं के कारण वे अपने जीवन को पूरी तरह से जीने में सक्षम नहीं हो पाते।

भारत में शिक्षा के अधिकार कानून 2009 के लागू होने के बावजूद, विकलांग बच्चों के लिए शिक्षा की उपलब्धता अभी भी बहुत कम है। रॉव (2016) ने इसे रेखांकित किया है कि विकलांग बच्चों तक शिक्षा की पहुंच



को सुनिश्चित करना एक प्रमुख चुनौती है। 'आकड़ों के अनुसार 20% विकलांग बच्चों/व्यक्तियों तक शिक्षा नहीं पहुँच पायी है' यह एक गंभीर समस्या है जो दर्शाता है कि विकलांग बच्चों के लिए शिक्षा का प्रबंध पर्याप्त नहीं है और यह समाज के दृष्टिकोण को भी उजागर करता है।

विकलांगता केवल शारीरिक अक्षमता तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक सामाजिक रूप से निर्मित अवधारणा है। यदि समाज विकलांग व्यक्तियों के लिए एक समावेशी और सुगम्य वातावरण प्रदान करता है, तो वे अपनी पूरी क्षमता को पहचान सकते हैं और समाज में सकारात्मक योगदान कर सकते हैं। इसके लिए हमें न केवल कानूनों और संस्थागत प्रबंधों में सुधार की आवश्यकता है, बल्कि विकलांग व्यक्तियों के प्रति समाज की मानसिकता में भी बदलाव लाना होगा। जब हम विकलांग व्यक्तियों के प्रति अपनी सोच में बदलाव करेंगे और उन्हें समान अवसर प्रदान करेंगे, तब हम एक समावेशी और न्यायपूर्ण समाज की ओर कदम बढ़ा सकते हैं। जहाँ विकलांग व्यक्ति न केवल समाज का हिस्सा हों, बल्कि समाज में सक्रिय रूप से योगदान भी कर सकें। विशेष शिक्षा में प्रशिक्षु शिक्षकों के दृष्टिकोण को प्रभावित करने वाले कारक उनके शिक्षण विधियों और सफलता को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करते हैं। व्यक्तिगत अनुभव, शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम, सामाजिक और सांस्कृतिक प्रभाव, सहयोगी वातावरण, प्रेरणा और रुचियाँ, समय और संसाधनों की उपलब्धता, और शिक्षण के प्रति विश्वास इन सभी कारकों का प्रशिक्षु के दृष्टिकोण पर गहरा प्रभाव पड़ता है। यदि इन कारकों को सकारात्मक दिशा में बढ़ावा दिया जाए, तो विशेष शिक्षा में प्रशिक्षु शिक्षकों की सफलता और प्रभावशीलता में सुधार किया जा सकता है, जिससे विकलांग बच्चों के लिए एक अधिक समावेशी और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रणाली सुनिश्चित की जा सकती है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि विशेष शिक्षा में प्रशिक्षु शिक्षकों के दृष्टिकोण पर प्रशिक्षण कार्यक्रमों का महत्वपूर्ण प्रभाव होता है, विशेषतः जब ये कार्यक्रम सांवेगिक रूप से विशिष्ट बालकों के लिए होते हैं। ये कार्यक्रम न केवल शैक्षिक कौशल सिखाते हैं, बल्कि प्रशिक्षु शिक्षकों के दृष्टिकोण में सकारात्मक बदलाव लाने, उनकी शैक्षिक क्षमता को सुधारने और समाज में समावेशिता को बढ़ावा देने में भी सहायक होते हैं। इन आधारों पर कहा जा सकता है कि विशेष शिक्षा पाठ्यक्रम के प्रशिक्षण कार्यक्रमों का दृष्टिकोण पर गहरा प्रभाव पड़ता है। ये कार्यक्रम प्रशिक्षु शिक्षकों को शैक्षिक कौशल के साथ-साथ उनके दृष्टिकोण, मानसिकता और बच्चों के प्रति संवेदनशीलता को भी विकसित करते हैं। प्रशिक्षुओं का आत्मविश्वास, सहानुभूति और बच्चों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण बढ़ता है, जो अंततः उनके शिक्षण व्यवहार और विशेष शिक्षा के क्षेत्र में उनकी प्रभावशीलता को बढ़ाता है। अतः स्पष्ट है कि प्रशिक्षण कार्यक्रमों का दृष्टिकोण पर महत्वपूर्ण प्रभाव है।

संदर्भ-सूची :-

1. कुमारी, आर. (2013). विकलांगता विशेषांक, योजना।
2. गाताडे, एस. (2013). विकलांगता एवं प्रौद्योगिकी, योजना।
3. गुप्ता (2016). विकलांगता से आगे सुगम्यता और कल्याण, योजना।
4. तरंग, जे. (1998). विकलांगों के लिए शिक्षा प्रकाशन विभाग : सूचना एवं प्रसारण भारत मंत्रालय।
5. राव, आई. (2016). विकलांगजनः शैक्षिक अधिकार व अवसरों का उन्नयन, योजना।
6. शिक्षा का अधिकार अधिनियम (2009).
- 7- [https://www.edudel.nic.in/upload/upload\\_2017\\_18/rteact\\_hindi\\_dt\\_18072017.pdf](https://www.edudel.nic.in/upload/upload_2017_18/rteact_hindi_dt_18072017.pdf)

६०★७३



UGC Approved Journal No. 48416 (Old), Impact Factor : 6.875 (IIFS)

ISSN : 2393-8358

# Interdisciplinary Journal of Contemporary Research

*An International Peer Reviewed Refereed Research Journal*

Office : VPO Nandpur, Tehsil-Jubbal, District-Shimla, Himachal Pradesh / Branch Office: D.L.W., Varanasi (U.P.)  
Mob. 9415388337, Email : [ijerjournal971@gmail.com](mailto:ijerjournal971@gmail.com), Website : [ijerjournals.com](http://ijerjournals.com)

Dated : 17/04/2025

Ref. : IJCR/04/13

## CERTIFICATE OF PUBLICATION

This is to certify that the research paper of

**Ms. Geeta Bhutani**

Research Scholar, Department of Education, Mansarovar Global University, Billkisganj, Sehore, Madhya Pradesh

**Dr. Rama Singh**

Research Guide, Department of Education, Mansarovar Global University, Billkisganj, Sehore, Madhya Pradesh

entitled

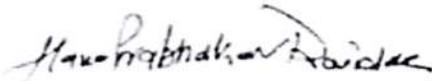
"Specific Adapting Strategies and Problems Pertaining to Each Stage of Life – Childhood and Adolescence"

has been published in our Peer Reviewed Refereed Research Journal.

*Interdisciplinary Journal of Contemporary Research*

(Vol. 12, No. 4.1, April 2025).

With best wishes.



**Dr. Hans Prabhakar Ravidas**

Editor

Interdisciplinary Journal of  
Contemporary Research  
An International Refereed  
Research Journal



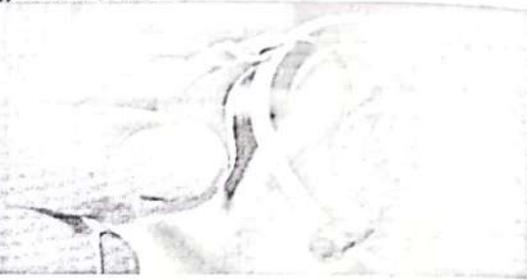


**Dr. H.L. Sharma**

Editor

Interdisciplinary Journal of  
Contemporary Research  
An International Refereed  
Research Journal

# International Journal of Speech and Audiology



E-ISSN: 2710-3854  
P-ISSN: 2710-3846  
IJSAS 2024; 5(1): 01-02  
© 2024 IJSAS  
www.rehabilitationjournals.com  
Received: 03-11-2023  
Accepted: 05-12-2023

**Dinesh Kumar Bindal**  
Assistant Professor,  
Department of Visual  
Impairment, AIRSR Rohini,  
New Delhi, India

## Community based inclusive development

**Dinesh Kumar Bindal**

### Abstract

As we all know that disability is not a disease but yes it is unpredictable. Person whether it is a man or a woman or a child having permanent or temporary disability find it difficult in living in society as they feel inferior in comparison to the person having no disability. CBID is a way of working that ensures persons with disabilities are respected and included their communities on an equal basis in all areas of life. But on the whole having disability is not abnormal. For making people comfortable with his or her disability Government has started an inclusive development program which is people centered, community driven and human rights based. The terms CBR and CBID are frequently used interchangeably, which can be confusing. Programs and initiatives implementing the approach, however, can be seen to be located along a continuum of work from rehabilitation services in constrained settings to multi-sectorial, rights-based programs which work with others to achieve inclusive community development. It is an approach that brings change in the lives of persons with disabilities at community level, working with and through local groups and institutions.

**Keywords:** Inclusion, development, approach, disability, rehabilitation, services, pre-school, programme

### Introduction

CBID is introduced by Government to help people understand that disability is totally normal. Globally billions of people have different kinds of disabilities now a day. But this is totally normal. It is a positive approach that brings changes in life in a positive way. It is a key approach to realize the convention on the rights of persons with disabilities and leave no one behind in achieving the sustainable development goals. It offers opportunities to people with disabilities to join community based self-help groups which give them a sense of belonging to their livelihood possibilities despite their disabilities. It acts like a harbinger of hope in their lives. It works closely with the local partners and local governments to bring about significant changes. It includes health, education, livelihood, social and empowerment activities. Building strong communities requires a focus on equal access to good quality services and aimed at supporting and working with people with disabilities and their families and encourage them to participate in the social, economic and political life of their communities.

It works on the principle of Convention on the Rights of Persons with Disabilities. CPRD is and international Human Rights Treaty of the United Nations which is intended to protect the rights and dignity of persons with dignity. It takes to a new height the movement from viewing persons with disabilities as objects of charity medical treatment and social protection towards viewing persons with disabilities as subjects with rights who are capable of claiming those rights and making decisions for their lives based on their free and informed consent as well as being active members of society.

### Aims

1. Its aim is to promote the participation and voice of people with disabilities in decision making processes at local level.
2. In high risk areas CBID programs include activities that address community preparedness and resilience for when natural and human caused disasters strike.
3. It strengthens and enhances earlier work and encourages more inclusive, responsive and accountable communities.

**Correspondence**  
**Dinesh Kumar Bindal**  
Assistant Professor,  
Department of Visual  
Impairment, AIRSR Rohini,  
New Delhi, India



### Features

1. This programme will create a pool of grass root rehabilitation workers at community level.
2. It will help people with disabilities to work alongside ASHA and Anganwadi workers to handle cross disability issues and to facilitate inclusion of persons with disabilities in the society.
3. This programme is designed to provide competency based knowledge and skills among the workers which will enhance their ability for successfully discharging their duties.
4. This programme will help in developing the workers who will be known as 'Divyang Mitra' which means the friends of persons with disabilities.
5. The National Board of Examination in Rehabilitation under the Rehabilitation Council of India will conduct examinations and award certificates to pass-out candidates.

### Strategies for CBID

1. **Inclusive education starts in Pre School**
  - Early Identification System.
  - Home Based Early Education.
  - Identification of Children with their learning needs in preschool.
2. **Assessment**
  - Exploration of family live, the family is expert.
  - Observation during classes.
  - Level of development and advances.
  - Individual learning profiles and objectives.
3. **Teamwork**

**Itinerant teachers work together with classroom teachers to**

  - Developing individual programs.
  - Referrals for specialized attention.
  - Supporting classroom adaptation.
  - Organizing support in the classroom.
  - Facilitating activities of sensation and training.
4. **Solve Problems with School Resources**
  - Teachers working in teams.
  - Organizing structured meeting with limited time.
  - Discuss alternatives and elaborate action plan based on needs of the student.
  - Implementation plans to evaluate results.
5. **Activity Based learning**
  - Start from life reality of the students.
  - Integrate all senses.
  - Movement is the door learning.
  - Self-evaluation.
6. **Learning based on interests, accepting the diversity**
  - Find out common interest in classroom.
  - Evaluation of what do I know, what do I want to know, what did I learn.

### Conclusion

CBID is not meant only a rehabilitation/health sector; it also acts as an approach which emphasizes on cross cuts multiple sectors and subsequently requires multi-sector engagement and coordination. Community based inclusive development (CBID) practice focuses on the creation of inclusive societies where people with disability have access to social and development benefits like everyone else in their communities. This transition from CBR to CBID has not been immediate and the terms CBR and CBID are

frequently used interchangeably, which can be confusing. Programs and initiatives implementing the approach, however, can be seen to be located along a continuum of work from rehabilitation services in constrained settings to multi-sectorial, rights-based programs which work with others to achieve inclusive community development. The main aim is that no one should be excluded from development for any reason, and that the inclusion of marginalized people in development processes reduces poverty, builds community resilience and benefits the whole of society. Together people analyses and address the issues that contribute to inclusive development in their community.

### References

1. CBR Network, South Asian Region. CBR Frontline Digest (A quarterly journal); c1993.
2. CBR with and for people with disability joint position paper. ILO, UNESCO, UNICEF ad WHO; c1994.
3. Indian Journal of Disability & Rehabilitation DRCR; Ministry of Welfare, New Delhi, Edited by Achala Pahwa (190), 1991 Jul-Dec, 5(2).
4. Pahwa A. Manual on CBE (A Comprehensive handbook for field functionaries for identification & Management of Disabilities at the grass root level) DRCR, Ministry of Welfare, government of India; c1990.
5. Desai CHJM. Human Rights of the Disabled National Association for the Blind (NAB), Bombay; c1990.
6. Warner D. Disabled Village Children (A guide for Community health workers, Rehabilitation workers and families) The Hesperian Foundation, USA; c1987.
7. Zutshi B. Disability status in India. (A research report) New Delhi; 29 December; c2004.
8. <http://www.disabilitynet.net>
9. <http://www.accessibility.co.in>
10. <http://www.cbm.org>
11. <http://www.inclusive.com>

